SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-3, March- 2024
www.shikshasamvad.com

# "21वीं सदी में गाँधीवाद की उपयोगिता एवं महत्व"

**देवेन्द्र कुमार**
शोधकर्त्रा
ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर, (उ.प्र.)

**डॉ0 पायल गोयल**
शोध पर्यवेक्षक
ग्लोकल विश्वविद्यालय,सहारनपुर, (उ.प्र.)

**शोध सारांश:**

*निष्कर्ष के आधार पर कहा जा सकता है कि गांधीजी के नैतिक आदर्श उन्हें एक ऐसी विरासत में ले जाते हैं, जो इतिहास भी बनाता है और वर्तमान भी। गांधीजी हमारे साथ नहीं है। वह इतिहास के रूप में हमारे साथ रहे, लेकिन वे हमारे वर्तमान भी है, क्योंकि उन्होंने जिन मूल्यों और आदर्शो की स्थापना हेतु सभी को प्रेरित और उद्‌बोधित किया, उनका वह उपहार एक पीढ़ी को दिये जाने वाला सात्विक प्रयास है। वे नैतिक क्षेत्र में आज भी उतने ही प्रासंगिक है, जितने अपने जीवनकाल में थे। उनके आदर्श और विरासत दोनों वर्तमान राजनीति, समाजनीति, धर्मनीति और अर्थनीति से दूर हो गये है। इसके लिए गांधी जी को नहीं, बल्कि पीढ़ी के सभी लोगों को यह कहकर आरोपित किया जाये कि उनका आकंलन केवल उनकी उपलब्धियों से नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि उससे भी किया जाना चाहिए, जिसकी उन्होंने कोशिश की।*

***मुख्य शब्द–*** *अहिंसा, उपयोगिता, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धर्मनीति, सहानुभूति।*

गाँधी जी के विचारों की 21वीं सदी में प्रासंगिकता के प्रश्न पर कहा गया है कि गांधी जी एक ऐसे समाज की रचना महत्वपूर्ण मानते थे, जिसमें सामाजिक समरसता का सिद्धांत सर्वोपरि हो। इस समरसता का अर्थ है कि सामाजिक जीवन को जहां एक ओर विषमताओं से मुक्त करना चाहते थे, वहीं दूसरी ओर समतामूलक समाज की स्थापना के पक्षधर भी थे, जिसमें स्त्री–पुरूष समान हों। लिंग के आधार पर भेदभाव करना अनुचित है। भारतीय संविधान के अनच्छेद 14 में समानता के आधार पर और नीति निर्देशक तत्वों में अनुच्छेद 39 (क) में स्त्री–पुरूष को आर्थिक रूप से समान माना गया है। इसी के साथ –साथ वे जातिगत भेदभाव के आधार पर अस्पृश्यता उन्मूलन की

बात पर जोर देते थे, जो हमारे संविधान के अनुच्छेद 17 में परिभाषित किया गया है, जिसमें छोटी जातियों को सामाजिक आधार पर समानता लाने के लिए आरक्षण का प्रावधान किया गया, जो कि दलितों के उत्थान में

आशा की किरण बनकर कहीं अधिक सीमा तक सहायक बना। गांधी जी अस्पृश्यता उन्मूलन के साथ–साथ रंगभेद की नीति के भी विरोधी रहे। वे स्त्री–शिक्षा, स्त्री–कल्याण और स्त्रियों के योगदान को भी समाज के लिए उपयोगी मानते थे, जो वर्तमान समय में आवश्यकत भी है। उनकी मान्यता थी कि जिस समाज में स्त्रियों को सम्मानजनक स्थान प्राप्त होगा और उनके योगदान के समाज पर्याप्त महत्व देगा, वह समाज निश्चय ही आदर्शो में एक ऐसे मंदिर का निर्माण करेगा, जो सांस्कृकि मूल्यों और धरोहर के लिए अपनी पहचान बनाने में सक्षम होगा, जिसमें प्रेम, दया, करूणा, वात्सल्य, सहानुभूति और सद्भाव को अहिंसा की प्रतिमूर्ति मानते थे। स्त्रियों के प्रति गांधी जी के विचार इतने उदार

कि वे स्त्रियों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन का मेरूदण्ड कहते थे।

शिक्षा के बारे में गांधी जी के विचाार परिवर्तनशील रहे। वे ऐसी शिक्षा के पक्षधर थे, जो तकनीक या श्रम पर आधारित होने के साथ–साथ बुद्धि के विकास एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित हों। वे बुनियादी शिक्षा (प्राथमिक शिक्षा) के सहारे श्रम के प्रति आस्था जाग्रत करना चाहते थे। सामाजिक क्षेत्र में भी उन्होंने नैतिक मूल्यों पर जोर दिया, जिसमें नशाखोरी एवं मद्य– निषेध जैसी विकृतियों के विरूद्ध आन्दोलन चलाये।

गांधी के आदर्श और विरासत दोनों ही वर्तमान राजनीति से, धर्मनीति और अर्थनीति से दूर हो गये है। के० नटवरसिंह ने इसके लिए गांधी को नहीं, बल्कि इस पीढ़ी के सभी लोगों को यह कहकर आरोपित किया है कि ''गांधी जी का आकलन एव उनकी उपलब्धियों से नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि उससे भी किया जाना चाहिए, जिसकी उन्होंने कोशिश की।'' स्वतंत्रता–प्राप्ति के पश्चात् हमें ऐसा प्रजातंत्र मिला, जिसमें अशिक्षित व्यक्तियों के धनबल व बाहुबल के सहारे उसके मताधिकार के अर्थ बताये जाते रहे। पढ़ा–लिखा व्यक्ति जनप्रतिनिधि बनकर हमारे लिए आदर्श बनना चाहते है। यह दुर्भाग्य हम झेल रहे है। गांधी के आदर्शो में हने उन स्थितियों की खोज की, जिनमें विकृतियां ही अधिक थी। आदर्श मानकर उनका अनुसरण करने की जिज्ञासा कम थी। वर्तमान राजनीति की विकृतियों को स्पष्ट करने से पूर्व दो स्थितियों की व्याख्या करना आवश्यक है –(1) वर्तमान राजनीति केवल राजनीति है, इसमें सेवानीति नहीं है। (2) विकृतियां वीभत्स रूप धाण कर चुकी है, हम इन सभी अन्तर्निहित विकृतियों में डूब चुके है। हमनें सादगी के जिस संवाद को सुनाने का प्रयास किया, उसकी उपेक्षा करके राजनेताओं ने अपने भोग–विलासी जीवन में इतना वैभव भर लिया है कि वे सरलता, सहजता और सादगी को बिल्कुल भूल गये है। वे अपनी सुरक्षा और अपने व्यक्तिगत सुख और आराम को सर्वोपरि मानते हैं। वर्तमान जनप्रतिनिधियों के रहन–सहन का वैभवी आधार समाज को सदाचार की शिक्षा नहीं देता। वैसे भी भारतीय राजनीति का दुर्भाग्यपूर्ण पक्ष है कि अधिकांश राजनीतिक दलों के नेताओं में अति विलासिता और वैभव की प्रवृत्ति बढ़ रही है। आलोचनात्मक दृष्टिकोण के आधार पर कहा जा सकता है कि राजनीति में ऐसे लोगों का प्रवेश भी बढ़ता जा रहा है, जो साधु के वेश में असाधु है, जो प्रत्यक्ष या अप्रयत्क्ष रूप से राजनीति को प्रभावित कर रहे है। यह कहीं तक भी अनुकरणीय नहीं है कि ऐसे राजनेता हमारा मार्गदर्शन एवं नेतृत्व करते हैं। दुखद पहलू यह है कि इसे हम अपवादस्वरूप नहीं मान सकते, क्योकि अधिकांश राजनीतिक दलों और नेताओं में यह प्रवृत्ति है कि वह जैसी है, वैसी दिखायी न दे, बल्कि पूजनीय माने। इस मानसिकता ने राजनीति में बहुमत ऐसे नेताओं को दिया है, जो प्रपंची है और जिनका जीवनवृत्त कड़वाहट भरी दुर्गन्ध से परिपूर्ण है।

गांधी जी हिन्दू और मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य सभी वर्गो एवं समुदायों के नेता थे, वे कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग से भी महान थे। वे दोनों संगठनों से ऊपर उठे और उन पर छा गये। आज की राजनीति में धर्मनिरपेक्षता का शब्द अस्वीकार्य उद्‌बोधन बन गया है, क्योंकि सर्वत्र धर्म की संकीर्ण व्याख्या को ही धर्म माना जाने लगा और धर्म पर आधारित संगठनों के द्वारा साम्प्रदायिकता का अनुसरण किया जा रहा है। रूढ़िवाद, अलगाववाद और अन्धविश्वास निहित स्वार्थो की यथास्थिति बनाये रखने हेतु प्रतिक्रियावादी राजनैतिक दर्शन एवं फासीवाद का द्योतक है। आज की राजनीति में न गांधी जी स्वीकार है, न नेहरू और न संविधान– सम्मत धर्म–निरपेक्षता स्वीकार है। बल्कि सर्वत्र साम्प्रदायिकता अपने विकराल रूप से खड़ी दिखायी दे रही है। आज विश्व–पटल पर राजनीति ने भौतिकवादी संस्कृति को बढ़ावा दिया है, जिसके परिणामस्वरूप भ्रष्टाचार और कमीशनखोरी में बढ़ोतरी हई है, उससे व्यक्ति के चेहरे जिस तरह से बेचेहरे हुए हैं, उसका मूल्याकंन करना सम्भव नहीं है, जिसका महत्वपूर्ण कर्ता राजनीति का व्यवसायीकरण होना है। राजीव सरकार ने भ्रष्टाचार को जिस निर्लज्ज और निरकुंश परिवेश में प्रस्तुत किया है, उसका कहीं कोई जवाब नही है। उनकी दृष्टि में यह निरकुंशता और निर्लज्जता की हद ही है कि नौकरशाही अब खुले आम रिश्वत भी लेते है और खुद को ईमानदार होने का ढ़ोल भी पीटते है। गांधीजी के राजनैतिक विचार इस परिदृश्य से आंजे जा सकते है, कि (1), नागरिकों के शोषण के विरूद्ध वह जनचेतना को जाग्रत करने के लिए आन्दोलित रहे। (2) अधिकारों के प्रणेता होने के बाद भी वे कर्तव्यों को करने के लिए पक्षधर रहे। (3) प्रजातन्त्रीय मूल्यों में उनकी आस्था की थी, इस कारण उन्होंने सम्पूर्ण समाज को सहभागिता का पाठ पढ़ाया। (4) संसदीय व्यवस्था में उनकी आस्था थी, लेकिन वे बिकाऊ संसद के पक्ष में नहीं थे। गांधीजी का राजनीतिक परिवेश आस्था और विश्वास का परिवेश था, इसलिए उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन में साधनों की पवित्रता के लिये आग्रह किया। इस आग्रह का अर्थ था कि हमारे लक्ष्य–प्राप्ति के साधन भी उतने ही पवित्र और महान होने चाहिए, जितने हमारे लक्ष्य महान है। पवित्रता का आग्रह सर्वोपरि था। उनकी धार्मिक दृष्टि के क्षेत्र में उनकी मान्यता को परिलक्षित करती है। धर्म के क्षेत्र में उनकी मान्यता थी कि (1) ईश्वर एक है, उसे किसी नाम या रूप से आप आलोकित करें, इसमें कोई अन्तर नहीं है। (2) धर्म में श्रेष्ठ गुणों को धारण करने की आवश्यकता है, इसलिए उसमें संकीर्णता के लिए कोई स्थान नहीं है। (3) धार्मिक विद्वेष फैलाकर कोई भी समाज संगठित नहीं रह सकता। (4) भारतीय राजनीति में धार्मिक कट्‌टर पंथ को जितना बढ़ावा मिला, गांधीजी ने उसे स्वीकार नहीं किया। इसलिये जिन्ना के धार्मिक उनमद को वे कभी स्वीकार नहीं करते थे, भारत का विभाजन भी उन्हें स्वीकार नहीं था।

जहां तक आर्थिक परिवेश का सम्बंध है, गांधीजी के लिये ऐसी व्यवस्था प्रिय नहीं थी, जिसमें शोषण और उत्पीड़न के लिये किंचित मात्र भी स्थान हो। उनका आर्थिक दर्शन मूलतः एक ऐसे परिवेश का दर्शन है, जिसमें सार्वजनिक सरलता और सहजता को स्थान दिया गया हो। इसलिये इस दृष्टि से गांधी के सम्पूर्ण परिवेश का आर्थिक कलेवर इस प्रकार रहा – (1) न्यूनतम आवश्यकताओं के साथ मनुष्य अपने और समाज के लिये करें। (2) भौतिकवादी संस्कृति में अनेक विकृतिया है, इसलिये भौतिकवादी भोग की संस्कृति को तिरस्कृत किया जाना चाहिए। (3) आर्थिक स्वावलम्बन के लिये लघु उद्योगों एवं कुटीर उद्योगों को सर्वाधिक महत्व दिया जाना चाहिए। (4) स्वदेशी का मंत्र व्यवस्था का आधार होना चाहिए। (5) मशीनीकरण की अंधी होड़ से समाज को बचाना चाहिए।

सत्य और अहिंसा का घनिष्ठ सम्बन्ध है। सत्य में ईश्वर का वास होता है। गांधीजी ने इस सम्बन्ध को आचरण माना है और सत्य के अनुसार आचरण करना ही अपना धर्म समझा। धर्म की इस विवेचना में धर्म की गांधीवादी मान्यताओं का आधार मिल जाता है। धर्म से उनका अभिप्राय औपचारिक या परम्परागत धर्म से नहीं था, बल्कि धर्म में वह सभी धर्मो का सार देखते थे, बल्कि पालन करने से मनुष्य सृष्टि–निर्माता (ईश्वर) के पास पहुंच जाता है। धर्म की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि वह हिन्दू धर्म नहीं, जिसे मैं अन्य धर्मो से सर्वोच्च मानता हूँ। लेकिन मेरा वह धर्म है, जो हिन्दुत्व को अतिश्रेष्ठ मानता है, जो मनुष्य की प्रकृति को परिवर्तित करता है। गांधीजी की यह मान्यता थी कि कोई मनुष्य धर्म के बिना जीवित नहीं रह सकता। यद्यपि ऐसा कई बार लोग भ्रमवश अथवा अंहकारवश घोषित करते हैं कि उन्हें धर्म से कोई प्रायोजन नहीं है। धर्म मानव क्रियाओं को वह नैतिक आधार प्रदान करता है, जो उनमें अन्यथा नहीं रहेगा। धर्म के अभाव में जीवन निरर्थक बनकर रह जायेगा।

**अहिंसा और युद्ध–** गांधीजी ने युद्ध का तिस्कार किया, क्योंकि वे स्वीकार करते थे कि खून–खराबे से संसार का भला नहीं हो सकता। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के बोअर युद्ध और प्रथम विश्वयुद्ध में ब्रिटेन की सरकार को सहायता दी, ऐसी स्थिति में उनकी अहिंसा का दम क्यों नहीं घुटा, यह जानने योग्य प्रश्न हो सकता है। इसका तार्किक उत्तर गांधी ने यह लिखकर दिया कि ''मैं स्वयं युद्ध का विरोधी हूँ, इसलिए मैंने अवसर मिलने पर भी मास्क अस्त्रों एवं शस्त्रों का प्रयोग नहीं सीखा। किन्तु जब तक मैं पशुबल पर स्थापित सरकार के अधीन रहता था और स्वेच्छा से उसकी बनाई सुविधाओं का उपयोग करता था, तब तक तो यदि वह कोई लड़ाई लड़े, तो उसमें उसकी मदद करना लाजमी था।'' युद्धों के परिवेश में प्रवेश पाने के बाद भी युद्ध को वे घुणा की दृष्टि से ही देखते थे। गांधी जी मूलतः अहिंसक रहे और स्थायी शक्ति के लिए युद्ध की समाप्ति के प्रतिपादक थे। गांधीजी भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के स्वरूप को बदलने का केवल आग्रह ही नहीं करते, बल्कि जनचेतना को आन्दोलित करने के लिए संघर्ष भी करते थे। उनके विचारों का परिवेश न दीनता का परिवेश है, और न ही किसी प्रकार की कमजोरियाँ का परिवेश। इसमें इतनी गहन सबलता है कि राजनीति, अर्थनीति और समाजनीति सबको विशालता प्रदान करता है।

**आर्थिक क्षेत्रों में प्रासांगिकता–** गांधीजी प्रत्येक मनुष्य को न्यूनतम आवश्यकताओं के साथ जीवन–यापन करने का आग्रह करते हैं, जो प्रत्येक व्यक्ति को आध्यत्मिक का आग्रह करते हैं, जो प्रत्येक व्यक्ति को आध्यात्मिक सुख एवं शान्ति प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। यदि व्यक्ति अपने साधनों से अधिक आवश्यकताओं वास्तविक आवश्यकताएं बन जायेंगी और हम उनकी पूर्ति के द्वंद्व में नीति को भूलकर अनीति पर चलने लगेंगे। इसी के साथ–साथ उन्होंने शोषण और उत्पीड़न से मुक्ति हेतु आग्रह, श्रम की समुचित आराधना, नैतिक अर्थ में व्यक्तिवादी विचारधारा पर जोर दिया। उनका कहना था कि ईश्वर उन लोगों का मित्र नहीं है, जो दूसरों का धन हड़पना चाहते हैं। धन की जिज्ञासा मनुष्य को किसी न किसी रूप में शोषण करने के लिए विवश करती है।

**राजनीतिक क्षेत्रों में–** दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी को जगह–जगह विदाई के समय लाखों रूपये के बहुमूल्य हीरे–जवाहरात भेंटस्वरूप दिये गये तथा उनकी असामान्य प्रकृति का अवलोकन पूरे विश्व को हुआ। कस्तूरबा गांधी ने सभी जेवरातों को अपने पास रखने और भारत ले जाने की बहुत जिद की । तब गांधीजी ने

उन्हें बहुत समझाया और कहा कि ये उपहार मुझे उस समाजसेवा के लिए दिये गये है, जो इनके बीच रहकर मैंने करने का प्रयास किया है। ये न मेरे है, न ही मेरे साथ जायेंगे। आप इनकी अधिकारिणी नहीं है। गांधीजी ने इससे पहले अस्तेय और अपिरग्रह के महान सिद्धांत के आधार पर अपने बीमा भुगतान को भी बंद कर दिया था। आभूषण का मोह त्यागकर उन्होंने दूसरे महानतम कार्यो को करके दिखाया और सम्पूर्ण प्राप्त उपहारों का ट्रस्ट बनाया और उनसे प्राप्त होने वाली आय को समजहित में खर्च करने का आग्रह किया। वर्तमान राजनीति के सभी छोटे–बड़े नेताओं को गांधीजी के इस महानतम कार्य से प्रेरणा लेनी चाहिए। लेकिन वर्तमान समय में यदि किसी पार्टी के अध्यक्ष को स्वर्ण–मुकुट मिलता है, तो वह उसको अपनी धरोहर मानकर अनावश्यक रूप से राजनीतिक मूल्यों को नकारता है। यह एक अकेला उदाहरण नहीं है, बल्कि अधिकांश राजनेता और राजनीतिक दल इस कीचड़ और गंदी में इतनी गहराई तक लिप्त हो चुके हैं कि इनकी चर्चा करना न तो उपयुक्त और न ही वांछनीय। राजनीति में नैतिकता, भ्रष्टाचार, भोगविलास की देन डूबती हुई राजनीति में गांधी एक आदर्श के रूप में, आध्यात्म एवं नैतिकता का परिवेश पूंजीवादी एवं साम्यवादी व्यवस्था के दर्शन, आदर्श नेतृत्व, किसान व मजदूर को स्वावलंबी बनाकर समतामूलक समाज की स्थापना करना, स्त्री –शिक्षा एवं स्त्री –सम्मान् सर्वोपरि साधन की पवित्रता पर जोर, अहिंसा के माध्यम से विश्वशांति स्थापित करना आदि विचार गांधीजी की महत्वपूर्ण देन हैं।

## :संदर्भ सूची :


1. अग्रवाल एस०एन०–गांधीवादी योजना के सिद्धांत, आगरा, 1998
2. अम्बेडकर, बी०आर०–मि०गांधी इमनैसीपेशन ऑफ दी अनटचेबिल्स, बम्बई, ठक्कर एण्ड को० 2015
3. कालेलकर– गांधी के व्यक्तिगत विचार, इलाहाबाद, स०सा० मण्डल, 2019
4. ग्रास एलेक जैण्डर– सोशल एण्ड पॉलिटिकल आइडियाज ऑफ महात्मा गांधी, नई दिल्ली, आई.सी. डब्ल्यू.ए, 1999
5. नारायण, जयप्रकाश– समाजवाद से सर्वोदय की ओर काशी, अ०भा०सर्व सेवासंघ, 2012
6. जावेदकर– सत्याग्रही शक्ति, वाराणसी, अ०भा० सर्वसेवासंघ, 2007
7. विश्वनाथ–दि सोशल एण्ड पॉलिटिकल फिलॉस्की ऑफ सर्वोदय आफटर गांधी, वाराणसी, अ०भा०, सर्वसेवा संघ, 1967
8. ढेबर, यू०एन०– गांधी ए प्रेक्टिकल आइडियोलिस्ट, बम्बई, भारतीय विद्या भवन, 1999
9. दत्ता, डी०एम– दि फिलासफी ऑफ महात्मा गांधी, मैडीसन यूनिवर्सिटी ऑफ विश्कोनसिया प्रेस, 2005
10. भण्डारी, चन्द्रराज–गाँधी दर्शन, इन्दौर, गाँधी हिन्दी मन्दिर, 1959
11. भारत सरकार– राष्ट्रनिर्माता गांधी, दिल्ली, प० डिवीजन, 2000
12. मशरूवाला, कि०घ०–गाँधी और समाजवाद, अहमदाबाद, पैन इन हैण्ड, 1956
13. धवन, गोपीनाथ –दि पालिटिकल फलास्फी ऑफ महात्मा गांधी, इलाहाबाद, नवजीवन प्र०म०, 2010
14. दिवाकर रंगनाथ– सत्याग्रह और विश्व शान्ति, नई दिल्ली, प्रगति प्रकाशन, 1999

निगम, एन०के०–गांधी जी डिस्कवरी ऑफ रिलीजन, भारतीय विद्या भवन बम्बई, 1963

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-03, March- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-March-2024/21

# Certificate Of Publication

***This Certificate is proudly presented to***

देवेन्द्र कुमार एवं डॉ0 पायल गोयल

***For publication of research paper title***

"21वीं सदी में गाँधीवाद की उपयोगिता एवं महत्व"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-03, Month March, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

**Dr. Neeraj Yadav**
**Editor-In-Chief**

**Dr. Lohans Kumar Kalyani**
**Executive-chief- Editor**

**Note:** This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com